

२. प्राणसई

इंदिरा संत (१९१४ ते २०००) :

कवयित्री, कथाकार, ललित लेखिका. लहानवयापासून वाङ्मयाचे संस्कार. उत्कट, भावपूर्ण आणि प्रतिभासंपन्न काव्यशैली. 'सहवास' हा पहिला प्रकाशित काव्यसंग्रह. 'शेला', 'मेंदी', 'मृगजळ', 'रंगबावरी', 'बाहुल्या', 'गभरिशीम' इत्यादी कवितासंग्रह प्रसिद्ध. 'श्यामली', 'चैतू' हे कथासंग्रह व 'मृद्गांध', 'मालनगाथा' हे ललित लेखसंग्रह प्रसिद्ध. त्यांच्या 'गभरिशीम' या कवितासंग्रहास साहित्य अकादमी पुरस्काराने सन्मानित केले आहे.

उन्हाळा संपत आलेला असला तरी त्याचा ताप अजूनही असह्य आहे. पावसाळा सुरू होण्याची प्रतीक्षा आहे. घराघरांत, शेताशेतांवर आवश्यक पूर्वतयारी झाली आहे. अशा वेळी पावसाळ्यापूर्वीच्या स्थितीचे वर्णन करताना कवयित्रीने या कवितेतून मैत्रिणीच्या नात्याने घनावळीला म्हणजे मेघमालेला केलेले आवाहन, धाडलेला निरोप भावरम्य आहे. ग्रामीण भागातील घराघरांतून केल्या जाणाऱ्या पावसाळ्यापूर्वीच्या तयारीचे वर्णन समर्पक शब्दांत कवितेत आले आहे. ही तयारी झाल्यावर पावसाची आळवणी केली आहे.

प्रस्तुत कविता अष्टाक्षरी छंदात असून दुसऱ्या व चौथ्या चरणात यमक साधलेले आहे.

पीठ कांडते राक्षसी

तसें कडाडतें ऊन :

प्राणसई घनावळ

कुठे राहिली गुंतून ?

दिला पाखरांच्या हातीं

माझा सांगावा धाडून :

ये ग ये ग घनावळी

मैत्रपणा आठवून...

पडवळा-भोपळ्यांचीं

आळीं ठेविलीं भाजून,

हुडा मोडून घरांत

शेणी ठेविल्या रचून,

बैल झाले ठाणबंदी,

झाले मालक बेचैन,

तोंडे कोमेलीं बाळांचीं

झळा उन्हाच्या लागून,

विहिरीच्या तळीं खोल

दिसूं लागलें ग भिंग,

मन लागेना घरांत :

कधी येशील तू सांग ?



ये ग दौडत धावत
आधी माझ्या शेतावर :
शेला हिरवा पांघर
मालकांच्या स्वप्नांवर,

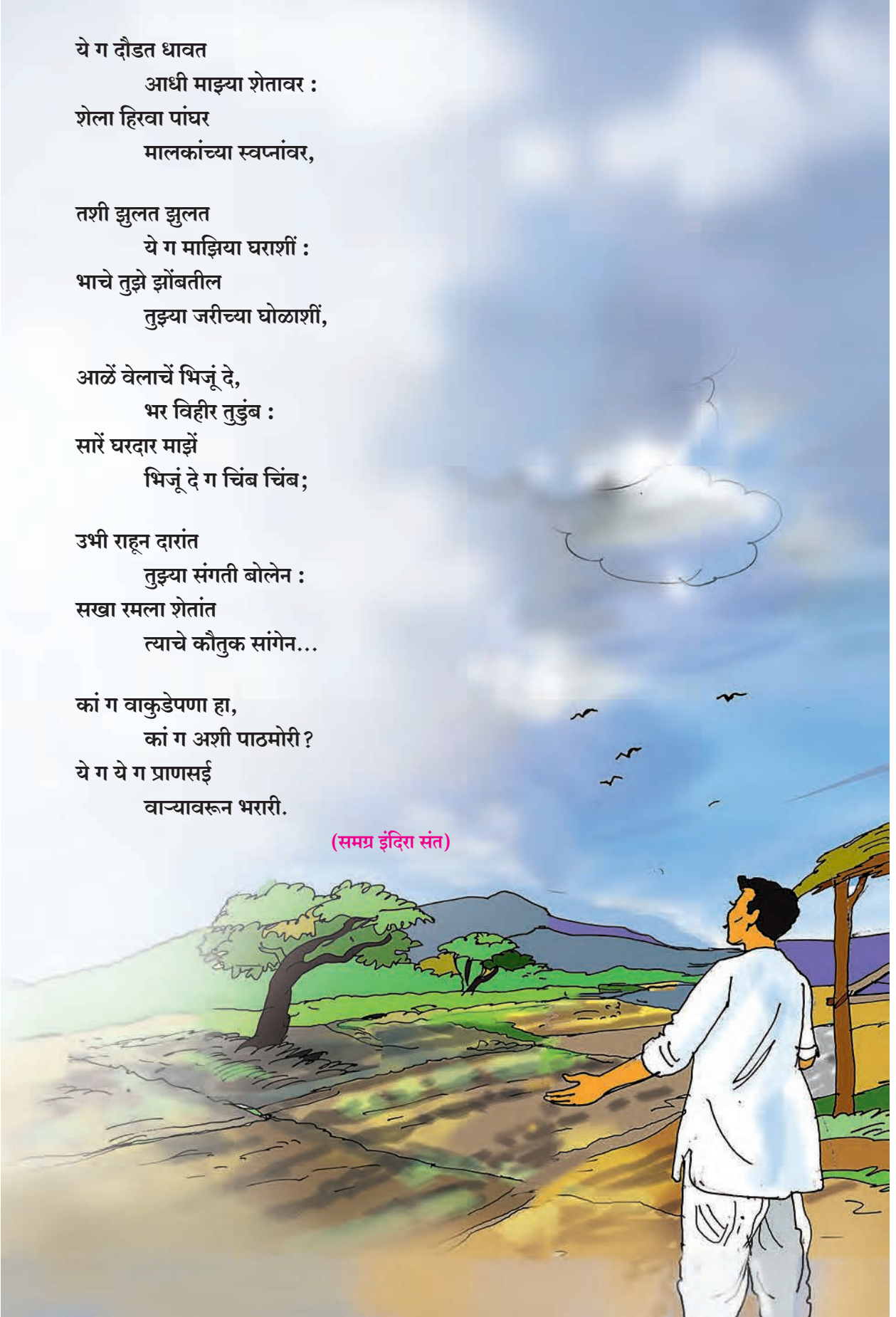
तशी झुलत झुलत
ये ग माझ्या घराशीं :
भाचे तुझे झोंबतील
तुझ्या जरीच्या घोळाशीं,

आळें वेलाचें भिजूं दे,
भर विहीर तुडुंब :
सारें घरदार माझें
भिजूं दे ग चिंब चिंब;

उभी राहून दारांत
तुझ्या संगती बोलेन :
सखा रमला शेतांत
त्याचे कौतुक सांगेन...

कां ग वाकुडेपणा हा,
कां ग अशी पाठमोरी ?
ये ग ये ग प्राणसई
वाऱ्यावरून भरारी.

(समग्र इंदिरा संत)



टीप

- ◆ अष्टाक्षरी छंद- कवितेच्या प्रत्येक चरणात आठ अक्षरे असतात त्यावेळी 'अष्टाक्षरी छंद' होतो.
उदाहरणार्थ, तशी झुलत झुलत → आठ अक्षरे. भाचे तुझे झोंबतील → आठ अक्षरे.
ये ग माझिया घराशीं → आठ अक्षरे. तुझ्या जरीच्या घोळाशीं → आठ अक्षरे.



कृती



(१) (अ) चौकटी पूर्ण करा.

- (१) कवयित्रीने जिला विनंती केली ती-
(२) कडाडत्या उन्हाला दिलेली उपमा-
(३) कवयित्रीच्या मैत्रीणीला सांगावा पोहोचवणारी-
(४) शेतात रमणारी व्यक्ती-

(आ) कारणे लिहा.

- (१) बैलांचे मालक बेचैन झाले आहेत, कारण
(२) बाळांची तोंडे कोमेजली, कारण

(इ) कृती करा.

कवयित्रीने प्राणसईच्या
आगमनानंतर व्यक्त केलेल्या
अपेक्षा



(२) (अ) खालील काव्यपंक्तींचा अर्थ स्पष्ट करा.

- (१) विहिरीच्या तळीं खोल दिसूं लागलें ग भिंग
(२) ये ग दौडत धावत आधी माझ्या शेतावर
(३) तशी झुलत झुलत ये ग माझिया घराशीं

(आ) खालील तक्त्यात सुचवल्यानुसार कवितेच्या ओळी लिहा.

| प्राणसईला कवयित्री विनंती करते त्या ओळी | प्राणसई न आल्याने कवयित्रीच्या अस्वस्थ मनाचे वर्णन करणाऱ्या ओळी | प्राणसई हीच कवयित्रीची मैत्रीण आहे हे दर्शवणाऱ्या ओळी | मालकाच्या स्वप्नपूर्तीसाठी आवाहन करणाऱ्या ओळी |
|---|--|--|--|
| | | | |

(३) काव्यसौंदर्य.

(अ) खालील ओळींतील भावसौंदर्य स्पष्ट करा.

(१) 'कां ग वाकुडेपणा हा,
कां ग अशी पाठमोरी ?
ये ग ये ग प्राणसई
वाच्यावरून भरारी'

(२) 'शेला हिरवा पांघर
मालकांच्या स्वप्नांवर'

(आ) कवयित्रीने उन्हाळ्याच्या तीव्रतेचे वर्णन करताना योजलेली प्रतीके स्पष्ट करा.

(इ) 'कवयित्री आणि प्राणसई यांच्यातील नाते जिह्वाळ्याचे आहे', स्पष्ट करा.

(४) अभिव्यक्ती.

(अ) तुमच्या परिसरातील पावसाळ्यापूर्वीच्या स्थितीचे वर्णन करा.

(आ) पावसानंतर तुमच्या परिसरात होणाऱ्या बदलाचे वर्णन करा.

(इ) पावसानंतर कोणाकोणाला कसाकसा आनंद होतो ते लिहा.

(५) रसग्रहण.

'प्राणसई' या कवितेचे रसग्रहण करा.



* शब्दसंपत्ती.

खालील शब्दांचे समानार्थी शब्द शोधून शब्दमनोरा पूर्ण करा.

उदा.,

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|----|----|---|----|---|---|----|---|---|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
| <p>वात</p> <table border="1"><tr><td>वा</td><td>रा</td></tr><tr><td>अ</td><td>नि</td><td>ल</td></tr><tr><td>स</td><td>मी</td><td>र</td><td>ण</td></tr></table> | वा | रा | अ | नि | ल | स | मी | र | ण | <p>समुद्र</p> <table border="1"><tr><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr></table> | | | | | | | | | |
| वा | रा | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| अ | नि | ल | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| स | मी | र | ण | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| <p>विद्युत</p> <table border="1"><tr><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr></table> | | | | | | | | | | <p>तलाव</p> <table border="1"><tr><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr></table> | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| <p>चंद्र</p> <table border="1"><tr><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr></table> | | | | | | | | | | <p>अंधार</p> <table border="1"><tr><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td></tr><tr><td></td><td></td><td></td><td></td></tr></table> | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |